Ancient Vedic Mantras and Rituals

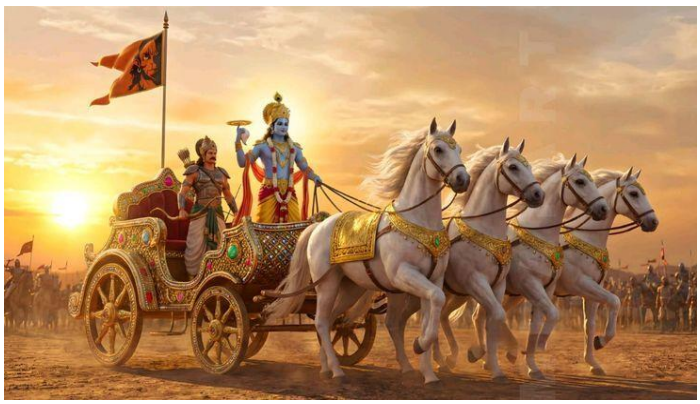

Shrimad Bhagavad Gita Chapter–2 Shalok–30 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय दो–श्लोक तीस | PDF

अध्याय 2 – सांख्य योग

श्लोक 30

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ 2.30 ॥

सरल हिंदी में भावार्थ

हे अर्जुन!
हर शरीर में जो "देही"—अर्थात आत्मा—स्थित है, वह सदा अवध्य है, उसे कोई नष्ट नहीं कर सकता। शरीर नष्ट हो सकता है, पर आत्मा कभी नहीं।
इसलिए किसी भी प्राणी के शरीर के नाश पर तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए।

विस्तृत व्याख्या

यह श्लोक आत्मा की अविनाशी प्रकृति को बहुत स्पष्ट रूप से समझाता है।
कृष्ण अर्जुन को बता रहे हैं कि मृत्यु केवल शरीर की है, आत्मा की नहीं।

1. ‘देही’ यानी शरीर में स्थित आत्मा

मनुष्य, पशु, पक्षी — किसी भी जीव के भीतर जो चेतना है, वही *देही* है। यह किसी एक जाति, एक रूप, एक अवस्था तक सीमित नहीं।

हर शरीर में आत्मा समान रूप से विद्यमान है— अंतर केवल शरीरों का है, आत्मा का नहीं।

2. आत्मा ‘नित्य’ है — उसका कभी अंत नहीं होता

कृष्ण बताते हैं कि आत्मा **न जन्म लेती है, न मरती है**। वह केवल शरीर के परिवर्तन को देखती है — जैसे कोई व्यक्ति वस्त्र बदलता है।

शरीर मरता है, पर जीव की चेतना अपनी यात्रा जारी रखती है।

3. ‘अवध्य’ — आत्मा को कोई शस्त्र, अग्नि या शक्ति नष्ट नहीं कर सकती

शारीरिक नाश संभव है, पर आत्मा पर किसी भी बाहरी तत्व का कोई प्रभाव नहीं होता।

- वह न कट सकती
- न जल सकती
- न सूख सकती
- न डूब सकती

आत्मा पूरी तरह अखंड, अभेद्य और अनन्त है।

इसलिए, जीवन-मृत्यु के शारीरिक स्वरूप पर अत्यधिक दुख करना आत्म-ज्ञान की दृष्टि से उचित नहीं।

तर्क का उद्देश्य

कृष्ण अर्जुन को युद्ध के प्रसंग में एक *आध्यात्मिक दृष्टि* दे रहे हैं—
कि जब आत्मा का नाश संभव ही नहीं, तो मृत्युभय, करुणा और मोह के आधार पर कर्तव्य से विमुख होना उचित नहीं।

तर्क साफ़ है:
शोक का आधार ही गलत है।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक हमें यह गहरी समझ देता है—

आत्मा अमर है, परिवर्तन केवल शरीर का है।

जब यह समझ दृढ़ हो जाती है—

- मृत्यु का भय कम हो जाता है
- शोक का बोझ हलका हो जाता है
- मन स्थिर व संतुलित होता है
- कर्तव्य निर्वाह सहज हो जाता है
- यह दृष्टि जीवन में वैराग्य और निर्भयता लाती है।

पदों का भावार्थ

- **देही** – शरीर में स्थित आत्मा
- **नित्यम् अवध्यः** – सदैव अविनाशी, जिसका नाश असंभव
- **देहे सर्वस्य** – हर जीव के शरीर में स्थित
- **न त्वं शोचितुमर्हसि** – तुम्हें शोक करने का कोई कारण नहीं

श्लोक का संदेश

- आत्मा सभी जीवों में समान रूप से अविनाशी है
- मृत्यु केवल शरीर का अंत है, आत्मा का नहीं
- जीवन के परिवर्तन स्वाभाविक हैं
- इसलिए, शोक और भय में डूबने के बजाय कर्तव्य का पालन करना चाहिए

RELATED ARTICLE

Chapter -2 Shalok – 28

Chapter -2 Shalok – 29

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS